वैल्हम स्कूल पत्रिका

१९७३ | हिन्दी विभाग | नं० ३२

रेल यात्रा

गर्मी की छुट्टियाँ होने वाली थीं। मुझे देहरादून से वाराणसी जाना था। मेरे छात्रावास के सभी लड़के उत्सुकता से उस दिन का इन्तजार कर रहे थे। सभी अपने माता-पिता के पास जल्द से जल्द पहुँचना चाहते थे। आखिर वह दिन आ ही गया। हम दून-एक्सप्रेस से जा रहे थे। बस ने हमको स्कूल से स्टेशन तक पहुँचा दिया।

हमारा एक डिब्बा रिजर्व था इसलिए हमें परेशानी नहीं हुई। छः बज कर पचास मिनट पर ट्रेन देहरादून स्टेशन से चल दी।

हमने अपने बिस्तरे खोल लिये। जिन लड़कों को नींद आ रही थी वे सो गये। कुछ पुस्तक पढ़ने लगे और कुछ मेरी तरह बाहर का सुन्दर दृश्य देखने लगे। दोनों तरफ हरे-भरे खेत थे। कभी सामने पहाड़ आ जाते तो कभी नाले या नदियाँ।

जैसे ही स्टेशन पर गाड़ी रुकती, वैसे ही फेरी वाले चिल्लाते, 'गरम चाय' 'गरम समोसे', 'ठंडा कोकाकोला', 'खिलौने वाला' आदि। गर्मी का मौसम था। इसलिए मैंने कोकाकोला पी लिया। कोई चढ़ता तो कोई उतरता था।

दूसरे दिन हम नौ बजे लखनऊ पहुँचे। वहां हमने जलपान किया। थोड़ी देर बाद ट्रेन चल दी।

ग्यारह बजे हम वाराणसी पहुँच गये और वहाँ मैं उतर गया। मेरे मम्मी तथा पापा मुझे लेने आये थे। मैं उनको देखकर बहुत प्रसन्न हुआ और यात्रा की सारी थकान भूल गया।

अमितकुमार
आयु ११ वर्ष

ताजमहल

ताजमहल दुनिया की एक मशहूर इमारत है। यह इमारत आगरा में स्थित है। ताजमहल को देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं।

ताजमहल संगमरमर से बना है। यह सुन्दर इमारत शाहजहाँ ने अपनी पत्नी मुमताज़महल की यादगार में बनवाई थी। ताजमहल को बनाने के लिए बीस हजार कारीगर लगे थे। इसको बनाने में इक्कीस वर्ष लगे थे।

ताजमहल के चारों ओर गगनचुम्बी मीनारें हैं। उसके आस-पास सुन्दर बगीचे हैं। जहाँ बहुत सुन्दर फूल हैं। उसके पास ही पानी के फव्वारे हैं जो बहुत मनोहर लगते हैं। यहाँ जलकुण्ड भी हैं जहाँ मछलियाँ क्रीड़ा करती हैं। ताजमहल के तीन ओर तो बगीचे हैं और चौथी ओर यमुना नदी बहती है। ताजमहल से आगरा फोर्ट साफ दिखाई देता है।

ताजमहल के अन्दर दो कब्रें हैं। ये कब्रें शाहजहाँ और मुमताज़महल की हैं। इन कब्रों पर कीमती पत्थर जड़े हैं। उसके चारों ओर जाली हैं। ये कब्रें नकली हैं। इन कब्रों के नीचे दो असली कब्रें हैं। वहाँ तक जाने के लिए सीढ़ियाँ हैं। ये कब्रें धरती के नीचे हैं।

राजीव
आयु ११ वर्ष

—

चिड़िया-घर की सैर

नई दिल्ली में पुराने पांडवों के किले के पास एक सुन्दर चिड़िया घर है। एक दिन हमारे स्कूल के बच्चे अपने अध्यापकों के साथ चिड़िया घर की सैर को गये थे।

चिड़िया घर के बड़े फाटक पर हमने टिकट खरीदा और भीतर चले। हम

कुछ दूर गये तो बड़े-बड़े पिंजरों की कतारें दिखाई दीं। इन में कई तरह के बन्दर और वनमानुष दिखाई दिए। इन्हें देखकर हम खुशी से चिल्ला उठे। इस पर कुछ बन्दर गुस्से से दाँत दिखाने लगे। तब हमने कुछ चने, मूंगफली निकालकर उनके आगे डाल दिये और वे खुशी से खाने लगे।

आगे चलने पर हमें हिरण और बारहसिंगे दिखाई दिये। इनके चितकबरे, भूरे रंग, भोली-भाली सूरतें और बड़ी-बड़ी आँखें बड़ी सुन्दर लगीं।

इतने में हमारे कानों में शेर के दहाड़ने की आवाज आई। हम जरा आगे बढ़े तो बड़े-बडे सींखचों के पिंजरों में शेर, चीते और बबर शेर दिखाई दिये। कुछ शेर और चीते अपनी गुफाओं में सो रहे थे। यहाँ दो तरह के चीते हैं। कुछ भूरे और कुछ चितकबरे। शेर का भयंकर डील-डौल, भयानक आँखें, खूँखार पंजे और गर्दन की आयाल हम देर तक देखते रहे।

आगे जाने पर पक्षी विभाग दिखाई दिया। यहाँ कई प्रकार की रंग-बिरंगी चिड़ियाँ और तोते चहचहा रहे थे। एक ओर मोर अपने सुन्दर पंख फैलाये नाच रहा था। चितकबरे, सफेद, काले कबूतर गुटरगूँ कर रहे थे। हमने वहाँ वे कबूतर भी देखे जो चिट्ठी ले जाते हैं। चिड़िया घर के बीच में झील-सी बनी हुई थी। इसमें हमने बत्तखें, हंस, सारस और बगुले देखे।

थोड़ा आगे बढ़े तो लम्बे जँगलेदार बाड़े में जेबरा घास चर रहा था। कुछ अजीब खच्चर और गधे इधर-उधर घूम रहे थे। हाथी बच्चों को सवारी दे रहा था।

अब हम थक चुके थे। एक जगह हरी घास पर सब लेट गये। फिर हमने जलपान किया और स्कूल लौट आए। चिड़िया घर की यह सैर मैं जीवन भर नहीं भूलूंगा।

संजीव
आयु १० वर्ष

४

दो भिखारी

बहुत समय पहले हरिद्वार में दो भिखारी रहते थे। उनमें से एक अंधा था और एक लंगड़ा था। हर रोज उन्हें भूखा रहना पड़ता था, क्योंकि अंधा आसानी से देख नहीं सकता था और लंगड़ा आसानी से चल नहीं सकता था।

एक दिन उन दोनों ने मिलकर एक तरकीब सोची। लंगड़े ने कहा—"मेरे दोस्त ! तुम मुझे अपनी पीठ पर चढ़ा लेना और मैं तुझे रास्ता बताऊँगा।"

वे चल पड़े। वह हर गली, हर शहर में भीख माँगते और जो मिलता उसको आपस में बाँट लेते।

इस तरह वह भूखे भी नहीं रहते थे और अपना जीवन सुख से बिताने लगे।

दीपेन्द्र
आयु १० वर्ष

—•—

जवाहरलाल नेहरू

जवाहरलाल नेहरू हमारे देश के प्रथम प्रधानमन्त्री थे। इनका जन्म १४ नवम्बर १८८९ को इलाहाबाद में हुआ था। उनके पिता का नाम पं० मोती लाल नेहरू और माता का नाम स्वरूप रानी था।

दसवीं की परीक्षा पास कर वकालात पढ़ने वे विलायत गये। वहां से लौटकर उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन शुरू कर दिया। इसके लिये उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा और लाठियों की मार भी खानी पड़ी।

नेहरू जी को गुलाब का फूल बहुत प्रिय था। वे बच्चों को बहुत प्यार

करते थे।। बच्चे उन्हें चाचा नेहरू कह कर पुकारते थे। २७ मई १९६४ को हमारे चाचा हम सब बच्चों को रोते हुए छोड़कर इस दुनिया से चले गये।

निखिल
आयु १० वर्ष

—•—

पहाड़ों की सैर

देहरादून के पास मसूरी नामक एक स्थान है। क्योंकि वह देहरादून से केवल बाईस मील, पहाड़ों पर बसा है। इसलिए हमने वहाँ जाने का निश्चय किया। हमारा उद्देश्य था पहाड़ों की सैर करना।

मसूरी हम पैदल ही चले गये। पहाड़ी इलाका था। रास्ता पगडंडियों से भरा और खतरनाक था। हम एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ की ओर आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ते रहे। पहाड़ उजाड़ वन की तरह थे। कहीं-कहीं हरियाली नजर आती थी।

हम एक पहाड़ी की चोटी पर पहुँच कर कुछ देर आराम करते, फिर थोड़ी देर के बाद उससे ऊँची पहाड़ी की ओर बढ़ जाते। पहाड़ों से जब हम नीचे देखते, तो सिवाय गहरी घाटियों के कुछ भी नजर न आता। पहाड़ी की चोटी हमें गगन के और भी समीप ले आती थी। पहाड़ों के ऊपर शान्ति ही शान्ति थी। शहर के शोरगुल से दूर हमें लगता था मानों हम ईश्वर के बहुत समीप पहुँच चुके थे।

पहाड़ों की सैर हमारे लिए खुशी का वरदान सिद्ध हुई और हम हँसते-गाते, खाते-पीते मसूरी पहुँच गये।

मनमोहन सिंह
आयु १० वर्ष

—•—

६

राजधानी एक्सप्रेस द्वारा यात्रा

मुझे रेल यात्रा बहुत अच्छी लगती है। इस बार मैंने राजधानी एक्सप्रेस से बहुत लम्बी यात्रा की। यह यात्रा बम्बई से लेकर दिल्ली तक की थी।

बॉम्बे-सेन्ट्रल पर राजधानी एक्सप्रेस खड़ी थी। प्लेटफार्म पर बहुत अधिक भीड़ थी। हमने अपनी सीटें खोजी और भीतर जाकर बैठ गये।

बाहर प्लेटफार्म पर बहुत गर्मी थी। अन्दर जाते ही वातानुकूल गाड़ी की ठंडक से बड़ा चैन मिला। इस रेल में मुझे एक चीज अच्छी नहीं लगी वह थी कि सोने की जगह नहीं थी।

इस रेल में कुछ खूबियाँ हैं, जैसे कि इसकी तेज़ गति। इसके कारण हम अपनी मंजिल पर जल्दी ही पहुँच जाते हैं। यह रेल सम्पूर्णतया वातानुकूल होती है। इस रेल में खाने-पीने की बड़ी सुविधा है। आदमी बैठा-बैठा हुक्म चला सकता है और अल्लादीन के चिराग़ की तरह उसका मन पसन्द खाना आ जाता है।

जिस वक्त हम बम्बई से दिल्ली आ रहे थे उस समय हमें टिकट बुक करने में बड़ी कठिनाई हुई थी।

जब यह गाड़ी चली तो हमको पता भी न चला कि कब वह चली और कब उसने रफ्तार पकड़ी।

हमने खिड़की से बाहर झाँका। खिड़की के सभी शीशे धूप के चश्मे के समान रंगीन थे। बाहर तेज़ धूप थी फिर भी ऐसा लगता था कि शाम हो गई है।

गाड़ी तेज़ी से भागती जा रही थी। स्टेशन पर स्टेशन पीछे छूटते जा रहे थे। वह मानो कहीं रुकने का नाम ही नहीं लेती थी।

धीरे-धीरे रात होने लगी थी। हमें नींद आ रही थी। हमें ठंड भी लग रही थी। हम अपनी सीटों पर सिकुड़ कर सो गये। कब रात बीती और कब दिल्ली आ गयी, हमें पता ही नहीं चला।

सन्दीप सपरा
आयु १० वर्ष

Saraswati Vandana—Founder's Day, 1972.

Junior School—Founder's Day, 1972
'पंडित जी और भेड़िया'

The Ugly Duckling in Regal State.

अमृतसर

भारत में कई तीर्थ स्थान हैं जैसे हरिद्वार, केदारनाथ, अमरनाथ आदि। अमृतसर भी इसी भांति सिखों का बहुत पवित्र स्थान है।

हमारा यह विश्वास है कि अमृतसर के सरोवर का पवित्र अमृत-जल पी कर मनुष्य पापों से मुक्त हो जाता है।

अमृतसर में स्वर्ण मन्दिर, दुर्गयाना मन्दिर और जलियाँवाला बाग है।

स्वर्ण मन्दिर को सिखों के चौथे गुरु रामदास जी ने बनाया था। इस मन्दिर में एक सरोवर है जिसका जल अमृत के समान पवित्र है। इस मन्दिर में एक अकालतख्त है। इस पर बैठकर गुरुजी न्याय करते थे।

अमृतसर में दुर्गयाना मन्दिर है। यह दुर्गादेवी का मन्दिर है।

जलियाँवाला बाग हमें उन सपूतों की याद दिलाता है जिन्होंने भारत की आजादी के लिए अपने आप को बलिदान कर दिया है। उनके बलिदान ने अमृतसर को भारत का एक तीर्थ स्थान बना दिया है।

मनप्रीत सिंह
आयु.....

डाकुओं का हमला

मैं अपने पिता जी के साथ बम्बई रेल द्वारा जा रहा था। रात का समय था। सब चुपचाप अपने डिब्बों में सो रहे थे। तभी हमें एक शोर ने जगा दिया। हमने खिड़की के बाहर झांक कर देखा। हमने देखा कि बहुत से डाकुओं ने रेल पर आक्रमण कर दिया है।

सब डर के मारे बाहर निकल आये। उन्होंने सबका सामान लूट लिया। मेरे पिता जी के पास दो हजार रुपये थे। उन्होंने दो तीन लोगों को मार दिया। तभी पुलिस की गाड़ी की आवाज आई। वह इतने डर गये कि अपना

लूटा हुआ सामान भी वहाँ छोड़ गये। पुलिस ने उनको गिरफ्तार कर लिया। सबने अपना सामान वापिस ले लिया। मैं इस डाकुओं के हमले को कभी नहीं भूलूंगा।

कवल किशोर

यदि मैं एक नेता होता

जब भी कभी मैं एकान्त में चुपचाप बैठता हूँ, मैं अपने भविष्य के बारे में सोचता हूं। मेरा मन कल्पना की उड़ान भरने लगता है। मैं सोचने लगता हूँ यदि मैं एक नेता बन जाऊँ तो कितना आनन्द आए।

यदि मैं नेता होता तो अपने देश की गरीबी हटाने के लिए बहुत से प्रबन्ध करता। खाने की कमी, अनाज की कमी और चीनी की कमी को दूर करने के बहुत से प्रबन्ध करता। अपने देश को साफ रखने के लिए भी बहुत से इन्तजाम करता। इन सब चीजों को सफल देखकर लोग मुझ पर बहुत खुश होते। बल्कि वे ही नहीं मैं भी बहुत खुश होता।

धीरे-धीरे मेरा नाम सारे भारत में फैल जाता। मैं भारत का प्रसिद्ध नेता होता और सभी लोग मेरा बहुत सम्मान करते।

विनोद कुमार
आयु १० वर्ष

९

एक तीर्थ स्थान

बनारस एक तीर्थ स्थान है। इसे काशी या वाराणसी भी कहते हैं। कहते हैं कि यह शिवजी के त्रिशूल पर बसा हुआ है।

यह मन्दिरों का नगर है। विश्वनाथ जी का प्रसिद्ध मन्दिर यहीं है। यह बहुत बड़ा और प्राचीन मन्दिर है। यहाँ दर्शन करने दूर-दूर से लोग आते हैं। संकट-मोचन हनुमान जी का प्रसिद्ध मन्दिर, जिसे तुलसीदास जी ने बनवाया था, यहीं है। यहाँ मंगलवार और शनिवार को बहुत भीड़ होती है। एक मेला सा लगा रहता है। मन्दिर में दर्शन करना एक कठिन काम बन जाता है। तुलसीदास जी का मानस मन्दिर भी दर्शन के योग्य है। इस मन्दिर की दीवारें संगमरमर की हैं। जिन पर समस्त रामायण लिखी हुई है। यहाँ भारतमाता का मन्दिर भी है जिसे पं० मदन मोहन मालवीय जी ने बनवाया था।

इस नगर में प्राचीन तथा आधुनिक मन्दिरों का अत्यन्त सुन्दर सममिश्रण है।

गंगा का किनारा अनगिनत घाटों से भरा हुआ है। 'हर-हर महादेव' और 'जय गंगे' के स्वर से यह नगर गूँजता रहता है। यहाँ प्रातः का दृश्य बहुत सुन्दर होता है। जैसे-जैसे सूरज उदय होता है, वैसे-वैसे घाटों पर भीड़ बढ़ती जाती है।

यहाँ शाम का भी दृश्य बहुत सुन्दर होता है। मन्दिरों में से आरती और घंटियों की आवाज आती है। लोग पत्तों की नावों में दीये और फूल रख कर गंगा में अपनी कामना पूरी करने के लिए बहाते हैं। रात के अंधेरे में ये पत्तों की नावें ऐसी टिमटिमाती हैं जैसे कि आकाश में सितारे।

इस नगर की अपनी ही सुन्दरता है। यहाँ की हवा, धूप और चन्दन की सुगन्ध के महकती रहती है। कानों में आरती और घंटियों की आवाज हर समय गूँजती है। दूर-दूर से लोग तीर्थ करने यहाँ आते हैं और अपने को धन्य समझते हैं।

अमितकुमार
आयु ११ वर्ष

१०

एक मेले का आँखों देखा हाल

पिछले वर्ष मैंने मुक्तसर का मेला देखा। यह मेला ४० मुक्तों की स्मृति में मनाया जाता है। इस अवसर पर लोग गुरुद्वारे के पवित्र तालाब में स्नान करते हैं।

मैं अपने मित्र के साथ यह मेला देखने गया था। मेले में बाजार तथा दूकानें बहुत सजी हुई थीं। लोगों ने रंग-बिरंगे कपड़े पहन रखे थे। बाहर मैदान में बहुत से झूले लगे हुए थे। मदारी अपना खेल दिखा रहा था। जोगी अपनी बीन से एक बड़े साँप को नचा रहा था। एक स्थान पर ढोलक बज रही थी और बहुत से किसान भाँगड़ा नृत्य कर रहे थे।

सागर-सरकस देखने के लिए बहुत भीड़ थी। हमने भी टिकट खरीदा और सरकस का आनन्द लिया। 'शो' समाप्त होने पर हम मेले की चहल-पहल देखते हुए घर वापस आ गये।

अश्वनि
आयु १० वर्ष

—•—

जन्माष्टमी

भारत में अनेक पर्व मनाये जाते हैं जिसमें जन्माष्टमी को बड़ा सम्मान मिलता है।

भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की अष्टमी की मध्य रात्रि को श्री कृष्ण का जन्म हुआ था। तब उनके माता-पिता, देवकी-वसुदेव कारागार में बंदी थे। कृष्ण जी के अत्माचारी मामा कंस ने उन्हें बन्दी बना रखा था, क्योंकि कंस को भविष्यवाणी हुई थी कि उसकी बहन देवकी का पुत्र उसका काल होगा। जब कृष्ण जी का जन्म हुआ, तब उनकी रक्षा के लिए वसुदेव उन्हें गोकुल में नन्द यशोदा के पास छोड़ आए थे।

इस पर्व पर कई लोग व्रत रखते हैं। सब मन्दिरों और कुछ घरों में पूजा तथा कीर्तन होते हैं। कहीं लोग कृष्ण जी के जीवन की झाँकियाँ बनाने में मस्त होते हैं और कहीं पूजा में। कीर्तन तथा पूजा मध्य रात्रि को समाप्त होती है। पूजा-कीर्तन घड़ियाल और घंटों की धुन के साथ जन्मोत्सव मनाया जाता है।

इस दिन हमें श्री कृष्ण जी का भगवत् गीता में दिया उपदेश याद आता है। भगवान श्री कृष्ण ने कहा कि सदा अच्छे कर्म करो और फल की आशा न रखो। यही हमारे लिए सबसे बड़ी शिक्षा है।

अतुल
आयु १० वर्ष

मेरी अभिलाषा

जब भी कभी मैं चन्द्रलोक की यात्रा के बारे में पढ़ता हूँ तो मेरे मन में नए विचार आते हैं। मेरी चन्द्रयात्रा की प्रबल इच्छा होती है। मैं सोचने लगता हूँ कि मैं चन्द्रमा की सैर कर सकता तो कितना सुन्दर होता।

मेरी अभिलाषा है कि मैं चाँद पर जाऊँ। इन्दिरा गाँधी मुझसे चाँद पर जाने के लिए कहें और मैं तत्पर हो जाऊँ। मेरे लिए एक सफेद और बड़ा-सा अंतरिक्ष यान बने और मैं 'स्पेस सूट' पहनकर यान के अन्दर जाऊँ। वह यान स्वयं-चालित होने के कारण मुझे चाँद पर ले जाए। चाँद के धरातल से मैं अजीब तरह के पत्थर तथा मिट्टी लाऊँ। मेरी चन्द्रयात्रा से मेरे देश के वैज्ञानिकों को लाभ हो।

वापस धरती पर आने के बाद इन्दिरा गाँधी मुझे चाँद पर जाने के लिए

एक बहुत बड़ा पुरस्कार दें। मैं पद्मश्री की उपाधि से सम्मानित किया जाऊँ। यदि मेरी यह अभिलाषा पूर्ण हो जाए तो मैं बहुत प्रसन्न हो जाऊँ।

नीरज किचलू
आयु १० वर्ष

अमरनाथ की तीर्थ यात्रा

अमरनाथ की धार्मिक तीर्थ यात्रा साधारणतः गर्मियों में रक्षाबन्धन के दिनों के आस पास की जाती है। इस वर्ष हम अक्तूबर मास में दर्शन के लिए गए। हम सब मिला कर कुल पाँच सदस्य थे। हम लोग पहल-गाँव से रवाना हुए।

हमने दो टट्टू किराये पर सामान ले जाने के लिए लिये। पहल-गाँव से पिसो-घाटी तक का रास्ता जंगल के भीतर से होकर जाता था। वृक्षों के द्वारा हमें काफी अड़चनें मिलीं। बहुधा हमें ऐसे स्थान मिले जहां मनुष्य आसानी से फिसल सकता था। हमने शेषनाग की झील पर रात्रि भर विश्राम किया। रात्रि में ठंड काफी थी। प्रातः हमें गर्मी और चमकता हुआ सूर्य मिला। एक स्थान पर तो घुटनों तक गहरी बर्फ मिली।

हम पंच-तरनी पर दोपहर को पहुँचे। यहाँ आकाश पर बादल छाये हुए थे। हम बड़ी कठिनाई से अमरनाथ की गुफा तक पहुँच पाये।

अमरनाथ की गुफा बहुत ही सुन्दर है। इसके आगे का दृश्य आँखों को आकर्षित करने वाला है। हमने उस स्थान का दर्शन किया जहाँ शिवजी ने तपस्या की थी। हम पाँच दिन की यात्रा के बाद फिर पहल-गाँव वापिस आ गये। इस प्रकार हमारी अमरनाथ की साहसिक यात्रा सम्पूर्ण हुई।

समीर
आयु ११ वर्ष

अच्छी संगति से लाभ

कहते हैं कि बालक संगति से बनता और बिगड़ता है। बचपन में जिसे बुरी संगति मिले वह बुरा बनता है और जिसे अच्छी संगति मिले, वह अच्छा बनता है।

अच्छी संगति से कई लाभ हैं। जो बालक अच्छी संगति में रहता है, वह बड़ा होकर अवश्य ही अपने देश का नाम उज्ज्वल करता है।

अच्छी संगति से आदमी में अच्छी आदतें उत्पन्न होती हैं। ऐसा पुरुष अपने आप ही संगति के प्रभाव से एक नेक और ईमानदार व्यक्ति बन जाता है। अच्छी संगति से उसमें सच्चाई, ईमानदारी, अच्छा आचरण तथा दूसरों के प्रति नेक व्यवहार, ये सब गुण अपने आप ही पैदा हो जाते हैं।

अच्छी संगति वास्तव में हर बच्चे के लिये बहुत ही जरूरी है।

मनमोहन सिंह
आयु १० वर्ष

एक ऐतिहासिक नगर

दिल्ली की एक-एक इमारत भारत के इतिहास के पृष्ठ के समान है। इस नगर का भ्रमण करने से ऐसा प्रतीत होता है मानो हम बीते हुए युगों से गुज़र रहे हों।

इन्द्रप्रस्थ के खण्डर हमें महाभारत के युग में ले जाते हैं। यह वही इमारतें हैं जिनमें पांडव जैसे वीर रहे। यहाँ पृथ्वीराज जैसे महारथी के समय के भी खण्डर हैं। वह पृथ्वीराज जिसकी वीरता की कविताएँ सुनकर ही संयुक्ता ने अपना हृदय उसको दे दिया था।

दिल्ली में मुगलों के समय के कई स्मारक हैं जैसे—कुतुब मीनार, लाल-

किला, जामा मस्जिद, पुराना किला, हुमायूँ का मकबरा, तुगलक कोर्ट आदि।

कनॉट प्लेस, संसद भवन, आकाशवाणी, केन्द्रीय सचिवालय, राष्ट्रपति भवन आदि अंग्रेजों के समय की झांकियां दिखाते हैं।

भारत की आज़ादी के बाद इस नगर में बहुत कुछ नवीनता आ गई है। यहाँ बहुत-सी आधुनिक और गगनचुम्बी इमारतें बन रही हैं। नेहरू प्लेस नाम का एक बहुत बड़ा गोलाकार बाजार बनाया जा रहा है जो कनाट प्लेस से कई गुना बड़ा और सुन्दर होगा।

अतुल

मेरी अभिलाषा

आजकल विज्ञान का युग है। विज्ञान के बिना कोई भी उन्नति नहीं कर सकता। इसलिये मैं एक वैज्ञानिक बनना चाहता हूँ।

वैज्ञानिक बनने के लिए हमें गणित और विज्ञान में बहुत अच्छा होना पड़ता है। मैं गणित और विज्ञान में बहुत अच्छा हूँ और मैं सोचता हूँ कि मैं वैज्ञानिक बन सकता हूं।

जब मैं वैज्ञानिक बनूँगा मैं बहुत से प्रयोग करूँगा। इससे मेरे देश की उन्नति होगी। मुझे 'नोबल पुरस्कार' भी मिल सकता है। मुझे बहुत पैसा भी मिलेगा। पर मैं सब पैसा अपने लिए नहीं रखूँगा। मैं उसमें से आधा गरीबों को दूँगा। इससे मेरे देश की गरीबी हट सकती है।

यही मेरी अभिलाषा है और अगर मैं इसे पूर्ण कर सकूँ तो मैं बहुत आनन्दित हूँगा।

विश्वदीप
आयु १० वर्ष

वसन्त ऋतु

उन्माद से मचलता हुआ मौसम। इसका आगमन होते ही पृथ्वी पर नवीन चैतन्य फैल जाता है। प्रकृति मानो लम्बी निद्रा से जाग उठती है।

शीत से ठिठुरे हुए वृक्षों को वसन्त पर नवजीवन मिलता है। डाल-डाल और पात-पात पर नया चैतन्य प्रकट होता है और सरोवर में कमल विकसित होते हैं। आम्र वृक्ष अपनी मंजरियों के द्वारा पुलकित हो उठते हैं। कलियाँ भविष्य के स्वप्न देखती कुमारियों के समान प्रतीत होती हैं। चम्पा, गुलाब, मोगरा, जुही आदि की सुगन्ध से वातावरण रमणीय हो जाता है। फूलों पर मतवारे भौंरे मंडराने लगते हैं। कोयल भी कू-कू करती है।

मनुष्य भी बहुत आनन्द मनाते हैं। हिमालय में तपस्या करने वाले शंकर का तपोभंग करने के लिए कामदेव ने वसन्त का ही आसरा लिया था।

वसन्त का सच्चा आनन्द गाँव में ही मिलता है। आजकल स्कूलों में भी वसन्तोत्सव धूमधाम से मनाया जाता है। प्रकृति क्या मनुष्य सभी हर्ष से फूले नहीं समाते।

इसलिए तो वसन्त को ऋतुओं का राजा कहा है।

विश्वदीप
आयु १० वर्ष

मेरी अभिलाषा

जब कभी मैं एकान्त में चुप बैठता हूँ, मेरे मन में नये-नये विचार आते हैं। मैं सोचता हूँ कि मैं बड़ा होकर क्या बनूँगा। मैं सोचता हूँ कि मैं थल सेना में जाऊँ, क्योंकि मेरे पिता जी भी थल सेना में हैं।

सबसे पहले मैं इन्टर पास करके एक 'कैडेट' बनूँगा। मैं ट्रेनिंग लूँगा और मन लगाकर सीखूँगा और जब मैं लड़ाई पर जाया करूँगा तो अपने दुश्मन को अपनी पीठ नहीं दिखाऊँगा। मैं बहादुरी से लड़कर 'परम-वीरचक्र पाऊँगा।'

जब मैं ऑफिसर बनूँगा, मैं अपने सैनिकों को अपने समान मानूँगा। मैं उनको कहूँगा—बहादुरी से लड़ो और मरने की चिन्ता मत करो। जब मैं जनरल बनकर रिटायर्ड हो जाऊँगा तब मैं अपने बेटे से कहूँगा कि तुम भी थल सेना में भर्ती हो और बहादुरी से लड़ा करना। मुझे आशा है कि मैं सफल हो पाऊँगा।

दुष्यंत सिंह
आयु १० वर्ष

चाँदनी रात में नौका-विहार

पूनम की रात थी। सितारे चमक रहे थे। चन्द्रमा की चाँदनी चारों ओर फैली हुई थी। रात्रि का दृश्य बहुत सुन्दर था। मैं खिड़की के पास बैठा सोच रहा था कि हम कब नौकाविहार के लिए जाएँगे। मुझे यह पता था कि हम आज रात को ही जायेंगे, लेकिन मुझे यह ज्ञात नहीं था कि हम कितने बजे जाएँगे। मैं आकाश को देखते-देखते सो गया।

थोड़ी देर बाद मैं एकदम से उठा। मेरी माता मुझे जगा रही थीं। उन्होंने मुझे बताया कि हम नौकाविहार के लिए जाने वाले हैं। मैं शीघ्र से तैयार हुआ। हम अपनी गाड़ी में बैठे और नदी के किनारे गये।

चन्द्रमा की किरणें फूलों, पेड़ों और नदी पर पड़ती हुई बड़ी सुहावनी लग रही थी। हम नौका में बैठ कर नदी की सैर करने लगे। एक आदमी हमारी नौका को चला रहा था। ठण्डी-ठण्डी हवा चल रही थी। नदी के किनारे बहुत से लोग घूम रहे थे। कोई गा रहा था, कुछ बच्चे आँख-मिचौली खेल रहे थे। बड़ा ही मोहक दृश्य था। थोड़ी देर घूमने के बाद हमारी सैर समाप्त हो गई और हम घर आ गये।

संजय अटल

१७

एक तीर्थ-स्थान—हरिद्वार

भारत में बहुत से तीर्थ स्थान हैं। उनमें से बदरीनाथ, केदारनाथ, अमरनाथ, रामेश्वरम और हरिद्वार बड़े प्रसिद्ध हैं।

पिछले वर्ष मैं हरिद्वार गया था। यह हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ स्थान है। यह उत्तर-प्रदेश में गंगा के तट पर स्थित है।

'हर की पौड़ी' यहाँ की बड़ी प्रसिद्ध है। यहाँ पर लोग दूर-दूर से स्नान करने आते हैं। उसके आस-पास कई मन्दिर बने हुए हैं। एक-दो मील दूर हनुमान जी का मन्दिर बना हुआ है।

हरिद्वार में बहुत से महात्माओं के आश्रम हैं। सप्त-ऋषि का आश्रम भी एक सुन्दर स्थान है। वहाँ सात ऋषियों के नाम पर कुटिया बनी हुई हैं। वहाँ एक विशाल मन्दिर बना हुआ है। हरिद्वार को सब लोग 'हरि का द्वार' मानते हैं। उनका विश्वास है कि गंगा में स्नान करने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

गंगा के दोनों ओर पहाड़ हैं। हरिद्वार में गंगा के एक ओर मनसा देवी का मन्दिर है तथा दूसरी ओर चण्डी देवी का मन्दिर है। हरिद्वार में सायंकाल गंगा की आरती होती है। उस समय लोग गंगा में दीप-दान करते हैं। यह दृश्य बहुत सुन्दर होता है।

सचमुच ही हरिद्वार एक सुन्दर तीर्थ स्थान है।

रोहित
आयु १० वर्ष

—

पथ-प्रदर्शक बापू

गीता में लिखा है जब-जब भारत की पवित्र भूमि पर अत्याचार होंगे, तब-तब भगवान जन्म लेंगे। जब अंग्रेजों का अत्याचार चरम सीमा पर पहुँच

गया, तब २ अक्तूबर १८६९ को मोहनदास कर्मचन्द गाँधी का जन्म पोरबन्दर में हुआ।

गाँधी जी के पिता का नाम कर्मचन्द गाँधी था जो राजकोट राज्य के दीवान थे। उनकी माता का नाम पुतलीबाई था। गाँधी जी पढ़ने में ज्यादा होशियार न थे। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा एक साधारण पाठशाला में हुई थी।

मैट्रिक पास करके वे इंग्लैंड गये। जाते समय उन्होंने अपनी माता को वचन दिया कि वह शराब, मांस आदि चीजें नहीं खायेंगे। वहाँ से वे बैरिस्टर बन कर लौटे।

अफ्रीका में उन्हें एक मुकदमें में जाना पड़ा। वहाँ उन्होंने भारतीयों की दुर्दशा देखी जिससे इनके हृदय पर बहुत चोट लगी।

भारत आकर उनके मन में स्वतन्त्रता की भावना जागृत हो गयी। अंग्रेजों का अत्याचार अन्त करने के लिए उन्होंने असहयोग आन्दोलन और सत्याग्रह आंदोलन आरम्भ किये। वे अहिंसा और सत्य के प्रेमी थे। उनके साथ लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, नेहरू जी आदि नेता भी थे। वे कई बार जेल भी गये। इनके प्रयत्नों के फलस्वरूप १५ अगस्त १९४७ को अंग्रेजों को विवश होकर भारत छोड़ना पड़ा।

स्वतन्त्रता के समय हमारा देश हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दो हिस्सों में बाँट दिया गया। बहुत से लोगों का विश्वास था कि गाँधी जी मुसलमानों का पक्ष लेते हैं इसी कारण ३० जनवरी १९४८ को देशद्रोही, नासमझ नत्थूराम गौडसे ने उन्हें मार दिया।

सब उनको बापू कह कर पुकारते थे। उनके जन्मदिन का उत्सव हमारे भारत देश में बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। गाँधी जी मर गये हैं परन्तु उनकी आत्मा जीवित है जो हमें देश-प्रेम का रास्ता दिखाती है। भारत ही ही नहीं उन्हें पूर्ण संसार आदर की दृष्टि से देखता है।

संजीव गोयल

रेल यात्रा

बादल में लगभग बीस दिन से बहुत गर्मी पड़ रही थी। गर्मी के मारे बुरा हाल था। अतः हमने शिमला जाने का विचार किया।

हम भटिण्डा तक कार द्वारा गए। वहाँ पर हमें कालका मेल पकड़नी थी।

कालका मेल में हमारी सीटें सुरक्षित थीं। हम अपनी सीटों पर सामान रखकर आराम करने लगे। स्टेशन पर बहुत भीड़ थी। कुली सामान उठाये भागे आ रहे थे। कुछ लोग आपस में लड़-झगड़ रहे थे। चाय बेचने वाले अपना शोर मचा रहे थे। कोई कोका-कोला, फेन्टा की पुकार मचा रहा था, कोई पान-बीड़ी की।

हमारी गाड़ी ठीक समय पर चली। चारों तरफ धूल ही धूल थी। इसलिए मैंने खिड़की का शीशा गिरा दिया। पंखे चल रहे थे परन्तु फिर भी गर्मी लग रही थी। कई स्टेशनों के बाद पटियाला आया। वहाँ का वातावरण कुछ अच्छा था। कुछ बादल घिर आये थे। जिससे कुछ सुख की साँस आई।

कोई दो घंटे बाद हम चण्डीगढ़ पहुँचे और फिर कालका। कालका से आगे चलने पर पहाड़ी मार्ग आरम्भ हो जाता है। शिमला पहुँचने से पहले कई सुरंगें पार करनी पड़ती हैं।

हमारी गाड़ी सांप की तरह बलखाती हुई धीरे-धीरे ऊपर चढ़ रही थी। मैंने खिड़की का शीशा गिरा दिया था। बाहर ठंडी हवा चल रही थी। बाहर बड़ा ही मनोरम दृश्य था।

शिमला में ठंडी हवा चल रही थी। शिमला स्टेशन से हम टैक्सी लेकर अपने होटल में पहुँच गये। इस प्रकार हमारी यह रेल-यात्रा समाप्त हुई।

मनप्रीत सिंह

एक तीर्थ-स्थान—हरिद्वार

वह पावन स्थान जहां देवी-देवताओं के मन्दिरों की विशेष महत्ता हो उन्हें तीर्थ स्थान कहते हैं। भारत में कई तीर्थ स्थान हैं। इनमें से सात धाम विशेष हैं। इनके नाम हैं: बद्रीनाथ, केदारनाथ, रामेश्वरम, प्रयाग, द्वारिकाधीश, जगन्नाथ तथा हरिद्वार।

लोगों का विश्वास है कि हरिद्वार 'हरि का द्वार' है। यहां स्वर्ग के द्वार खुलते हैं। 'हर की पौड़ी' पर जो नहा लेता है वह सीधा स्वर्ग जाता है। हरिद्वार में अनेकानेक मन्दिर हैं। विशेष मन्दिर मनसा देवी का है, जो एक पहाड़ी की ऊँची चोटी पर स्थित है। यह देवी अपने भक्तों के मन की कामना पूर्ण करती हैं।

हरिद्वार में शिवरात्रि और वैसाखी बड़ी धूम से मनाते हैं। वैसे तो यहां साल भर मेला सा रहता है पर पर्वों पर विशेष रौनक रहती है। शिवरात्रि पर दूर-दूर से, शिवजी के भक्त कांवर भर कर शिवजी पर चढ़ाने ले जाते हैं। सरकार का यहां पर विशेष प्रबन्ध होता है। यहां का सबसे सुन्दर दृश्य गंगाजी आरती होती है। पंडे लोग थालों में आरती सजाकर घंटे-घड़ियालों के साथ गंगा जी की आरती उतारते हैं। यात्री पत्तों के दोनों में फूल तथा दीपक रख गंगा जी में बहा देते हैं। गंगा जी की लहरों पर तैरते हुए ये दीपक बड़े सुन्दर लगते हैं। उस समय इतना सुन्दर लगता है, मानो यहीं आकाश गंगा उतर आई हो।

मुकुल
आयु १० वर्ष

पहेलियां

प्रश्न : दो गुफा के दो रखवाले,
दोनों लम्बे दोनों काले।

उत्तर : (नाक और मूंछें)

प्रश्न : काली-काली माँ, लाल-लाल बच्चे,
जहाँ जाए माँ, वहीं जाए बच्चे।
उत्तर : ( )

प्रश्न : रथ के आगे चलता हूँ,
मेरठ के बीच मोटर के पीछे।
रण के आगे, घर के पीछे,
अब बताओ मैं कौन हूँ ?
उत्तर : ()

प्रश्न : लाल-लाल मकान, काले-काले मेहमान।
उत्तर : (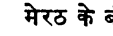)

प्रश्न : पहाड़ है पर पत्थर नहीं,
नदी है पर पानी नहीं बताओ मैं कौन हूं ?
उत्तर : (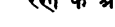)

नवल
आयु १० वर्ष

पहेलियां

प्रश्न : एक मुर्गा है, वह एक टीले पर खड़ा है और उसके चारों ओर पानी है। उसके लिए टीले पर सिर्फ पैर रखने के लिए जगह है। वह अण्डा कैसे देगा ?
उत्तर : (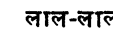)

प्रश्न : ना चोरी की, ना खून किया,
फिर उसका सिर क्यों काट लिया ?
उत्तर : ()

प्रश्न : एक बार एक मुर्गा चल रहा था। वह थककर बैठ गया तो किसी ने उसका सिर काट दिया तो वह मुर्गा सिर से चलने लगा तो बताओ वह कौन है ?

उत्तर : (पेंसिल)

प्रश्न : ऊपर सारे पेड़ नीचे सारे आदमी।

उत्तर : ([illegible])

हर्षराज
आयु १० वर्ष

चुटकुला

कुछ दिन पहले हम सब घर में बैठे बातें कर रहे थे कि अचानक मेरे बड़े भाई ने एक प्रश्न पूछा—"पापा, ओस कब पड़ती है ?" यह सुनकर मेरे छोटे भाई ने कहा—"जब बादल चलते-चलते थक जाते हैं तो उन्हें पसीना आ जाता है।"

पहेली

तीन रंगों का सुन्दर पक्षी,
नील गगन से भरे उड़ान,
यह सब आंखों का तारा,
सब करते इसका सम्मान।

उत्तर : तिरंगा झण्डा

दीपेन्द्र
आयु १० वर्ष

दिल्ली का गाँधी मेला

भारत के राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी की स्मृति में प्रति वर्ष एक मेला दिल्ली में लगता है। चांदनी चौक घंटाघर से बड़े स्टेशन की ओर जायें तो बाईं ओर कम्पनी बाग, सुन्दर दरवाजे और पंडाल देख कर पता चलता है कि यहाँ गांधी मेला लगा हुआ है।

यह मेला २७ सितम्बर से २ अक्टूबर तक लगता है। यह मेला लगातार पाँच दिन तक चलता है।

मैंने यह मेला पिछले वर्ष देखा था। इसका उद्घाटन प्रधान मन्त्री के हाथों से होता है।

मेले में मैंने प्रदर्शनी, बाजार और मंच देखे। मंच पर गांधी जी के जीवन पर भाषण होते हैं। चरखा प्रतियोगिता होती है। मैंने कुश्ती तथा खेल आदि भी मेले में देखे।

इतने लम्बे चौड़े मेले में कहीं झूले पड़े होते हैं, कहीं खेल-तमाशे होते हैं। दो अक्टूबर, गांधी जी के जन्म दिन पर यहाँ अपार भीड़ होती है। रात के समय बिजली की अगणित बत्तियों से सजे मंडप तारों भरे आकाश से होड़ करतेप्रतीत होते हैं।

गांधी जी भारत के महान पुरुष थे। इस मेले में शामिल होकर हमें उन के जीवन से यह सीखना चाहिए कि हम सच्चे देश भक्त बने तथा जन-जन की सेवा में अपना जीवन अर्पण करदें।

सोमेन
आयु ९ वर्ष

शेर का शिकार

एक बार हम चीते के शिकार पर गये। हमने मध्यप्रदेश का जंगल इस शिकार के लिए चुना था। हमारे शिकारी दल में पाँच व्यक्ति थे।

जंगल में हमने एक बकरी का बच्चा उस स्थान पर बांध दिया जहाँ चीता अक्सर आया करता था। हमारे लिए एक मचान बनाया गया था। वह बकरी का बच्चा बहुत जोर से मिमिया रहा था। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था इस कारण बकरी के मिमियाने की आवाज दूर-दूर तक गूंज रही थी।

थोड़ी देर बाद धरती पर पड़े सूखे पत्तों में कुछ आहट हुई। हम सभी चौकन्ने हो गये। हम चीते के लिए तैयार हो गये। किन्तु अचानक हमने देखा कि शेर और शेरनी का जोड़ा मन्थर गति से बकरी के बच्चे की ओर बढ़ रहा है। शेर को देख कर बकरी के मिमियाने की आवाज और कातर हो गई।

अचानक शेरनी ने झपट कर बकरी को गर्दन से पकड़ लिया। शेर इधर-उधर झाँक रहा था। जब उसने हमारी ओर देखा तो मेरे भैया ने गोली चला दी। मैंने उसके धड़ाके की आवाज पर आंखें बन्द कर लीं। कुछ क्षण बाद जब आँख खोली तो देखा कि शेरनी वहाँ थी ही नहीं। मेरे डैडी और मेरे भैया नीचे उतरे तो देखा कि शेर मरा पड़ा था। जब उसे नापा तो वह सात फीट चार इन्च लम्बा था। यह शिकार मैं कभी नहीं भूलूंगा।

हर्ष
आयु १० वर्ष

नाथद्वारा की यात्रा

गर्मी की छुट्टियों में जब हम घर आये तो श्रीनाथजी के दर्शन करने नाथद्वारा गये। यह अत्यन्त सुन्दर तीर्थ स्थान है।

उदयपुर से नाथद्वारा का रास्ता मोटर से एक घण्टे में तय कर सकते हैं। रास्ते में एक बहुत ही सुन्दर मंदिर एकलिंग जी का है। सभी यात्री नाथद्वारा जाते समय रास्ते में एकलिंग जी के दर्शन करने अवश्य रुकते हैं। यहाँ शिवजी का मन्दिर है।

नाथद्वारा वैष्णव सम्प्रदाय का सब से महत्त्वपूर्ण स्थान है। यहाँ बहुत

दूर-दूर से वैष्णव, श्रीनाथजी के दर्शन करने आते हैं। बारह महीने यहाँ बहुत भीड़ रहती है।

श्रीनाथजी के प्रतिदिन आठ बार दर्शन खुलते हैं। मन्दिर के बाहर चित्र तथा आभूषणों की अनेक दुकानें हैं तथा प्रसाद भी ढेर सारा मिलता है।

श्रीनाथजी का स्वरूप बहुत सुन्दर है। उनका कारोबार बहुत फैला हुआ है। तेल-घी के कुएँ हैं तथा सोने चाँदी की चक्कियों से केसर, कस्तूरी पीसी जाती है।

सैकड़ों वैष्णव श्रीनाथजी की सेवा में दिन-रात जुटे रहते हैं। श्रीनाथजी की महिमा देखने योग्य है। उनका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता है।

दलपत सिंह
आयु १० वर्ष

दशहरे का मेला

मुझे सबसे अच्छा दशहरे का मेला लगता है। यह मेला हर साल लगता है। यह पूरे भारत में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। इसे विजयदशमी भी कहते हैं। यह हिन्दुओं का बहुत बड़ा त्यौहार है। जिस दिन श्रीरामचन्द्रजी ने रावण को मारा था, उसी दिन से दशहरा मनाया जाता है।

हमारे नगर के सबसे बड़े मैदान में रावण, मेघनाथ और कुम्भकर्ण के पुतले खड़े किये जाते हैं और शाम को उन्हें जलाया जाता है। दूर-दूर के गाँव के लोग भी चलकर इस मेले को देखने आते हैं।

इस मेले में बहुत भीड़ होती है। चीजें बेचने वालों का यही दिन पैसा कमाने का होता है। कोई चाट बेच रहा है, कोई कुल्फी, कोई मूंगफली, कोई खिलौने, कोई तीर-कमान आदि। मैं अपने लिए हर बार तीर-कमान खरीदा करता हूँ।

इस मेले में झांकियां भी होती हैं। किसी में शिवजी बैठे हैं, किसी में रावण सीताजी को चुरा कर ले जा रहा है। शाम को जब रावण को जलाया जाता है तो खूब पटाखे छूटते हैं। इसके बाद रामचन्द्र जी की सवारी निकलती है। जिसके आगे लोग ढोल बजाते जाते हैं। सवारी के आगे हनुमान जी उछलते-कूदते जाते हैं। हनुमान जी को देखकर बड़ा मजा आता है। मुझे इस मेले में बड़ा आनन्द आता है।

सौजन्य सिन्हा
आयु १० वर्ष